वह जीवन जन्म निरर्थक है,
जिसमें प्रभु के प्रति प्यार न हो,
निष्फल वह विद्या बल वैभव,
जिससे जग का उपकार न हो।।

तर्ज अब सौंप दिया इस जीवन का।

वैसे तो नर तन दुर्लभ है,
जिसको पाने को सुर तरसे,
धिक्कार किन्तु उस मानव को,
जो नर तन पा भव पार न हो।।

ऐसा अनुपम अवसर पाकर,
मत चूको फँसकर दुनिया में,
मंजिल तक कैसे पहुंच सके,
यदि सन्त चरण आधार न हो।।

जैसे तन की खुराक भोजन,
सत्संग आत्मा का जीवन,
सत्संगति भी वह क्या जिससे,
इस मन का दूर विकार न हो।।

कहीं बनी बनाई बिगड़ न जाय,

बिगड़ों के संग बनाने में,
बन सके न बिगड़ी जनम जनम,
यदि साँवरिया सा यार न हो।।

औरन की भूलन भटकनि लख,
तू सावधान हो ऐ कबीर,
रख नारायण प्रभु ध्यान सदा,
यह नर जीवन बेकार न हो।।

वह जीवन जन्म निरर्थक है,
जिसमें प्रभु के प्रति प्यार न हो,
निष्फल वह विद्या बल वैभव,
जिससे जग का उपकार न हो।।

स्वर श्री राजेन्द्रदास जी महाराज।
प्रेषक ओमप्रकाश पांचाल।
9926652202

Source: https://www.bharattemples.com/vah-jivan-janm-nirarthak-hai/

Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App

https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw